योगवासिष्ठः

(महारामायणम्)

भाषानुवादकारः
श्रीकृष्ण पन्त शास्त्री

सम्पादकौ
श्रीकृष्ण पन्त शास्त्री
मूलशङ्कर शास्त्री

भूमिकालेखकः संशोधकश्च
मदन मोहन अग्रवाल

।। श्रीः ।।

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

521

योगवासिष्ठः

(महारामायणम्)

हिन्दीभाषानुवादसहितः

विस्तृतविषयानुक्रमणिका–समीक्षात्मकभूमिका–श्लोकानुक्रमणीयुतश्च

(भाग-दो)

हिन्दीभाषानुवादकारः

पण्डित श्रीकृष्ण पन्त शास्त्री

अध्यक्ष, अच्युतग्रन्थमाला, काशी

*

मूलसम्पादकौ

पण्डित श्रीकृष्ण पन्त शास्त्री

पण्डित मूलशङ्कर शास्त्री

*

भूमिकालेखकः ग्रन्थसंशोधकश्च

प्रोफेसर मदन मोहन अग्रवाल

एम.ए., पी-एच्.डी., डी.लिट्

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

University Department of Yoga RU

No/PGDY/ 265

Library

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

विषयानुक्रमणिका

उपशमप्रकरणम्

(पृष्ठ 989–1407)

1. मध्याह्नकाल की शङ्खध्वनि से सभा के उत्थान का वर्णन तथा वसिष्ठजी का आह्निककृत्य और रात्रि में विश्वामित्रजी के साथ स्थिति 989
2. आह्निक कर्मानुष्ठान, श्रीरामचन्द्र जी का सुनी हुई वार्ताओं का चिन्तन तथा सुने हुए पदार्थों में स्थिरता के लिए बुद्धि आदि की प्रार्थना करना 993
3. प्रात:काल स्नानगृह में आये हुए श्रीरामचन्द्र जी आदि के साथ श्रीवसिष्ठ जी का सभागृह में जाना और सभा का आरम्भ 996
4. राजा दशरथजी का श्रीवसिष्ठ जी के वाक्यों की प्रशंसा करना तथा वसिष्ठजी के वचन से श्रीरामचन्द्र जी द्वारा चिन्तित पदार्थों का अनुवाद 999
5. अविवेक से बढ़ी हुई मनोमात्ररूपी जगत्–सृष्टि की निवृत्ति के उपाय का क्रम 1002
6. पहले कर्मगतियों को कहकर जीवन्मुक्तिरूप अन्तिम जन्मवालों की जीवन्मुक्ति के लिए गुणप्राप्ति में साधारण क्रम का कथन 1007
7. अपने विचार से कुछ व्युत्पन्न चित्त वाले पुरुष की आकाश से फलपतन के समान ज्ञानप्राप्ति का वर्णन 1009
8. वसन्त ऋतु में उपवन में विहार कर रहे श्रीजनक जी ने सिद्धों द्वारा गीत शुभ श्लोक सुने, यह वर्णन 1010
9. यह सुनकर निर्वेद से घर आये हुए राजा का अर्थों के मूलकारण के विचार से मन का निर्णयकथन 1012
10. मध्याह्नकाल के कृत्यों में प्रवृत्त होने के लिए द्वारपाल द्वारा प्रार्थना करने पर भी राजा जनक का मौन होकर विचार करना 1018
11. आह्निक कार्य को कर चुके राजा का रात्रि के अन्त में अनेक विचित्र विवेकों से अपने चित्त का प्रबोधन 1021
12. राजा जनक की जीवन्मुक्तरूप से स्थिति का और विचार तथा प्रज्ञा के विचित्र माहात्म्य का विस्तार से वर्णन 1022
13. जनक के विचार को उदाहरण बनाकर चित्त के प्रशमन के उपायों का युक्तियों द्वारा विस्तारपूर्वक वर्णन 1026
14. नाना योनियों में दु:ख पा रहे, उपदेश के अयोग्य लोगों की उपेक्षा कर उपदेश के योग्य लोगों के लिए मन के मार्जन के उपाय का वर्णन 1038
15. चित्तता को प्राप्त हुआ आत्मा जिससे संसार में बँधता है, अनर्थबीजों से पूर्ण उस विचित्र तृष्णा का वर्णन 1044
16. ध्येय–ज्ञेयभेद से वासनात्याग का वर्णन, उससे जीवन्मुक्त और विदेहों के लक्षण का कथन 1047
17. जिस प्रकार के निश्चयों से युक्त जीवन्मुक्त पुरुष बन्धन में नहीं पड़ता और अज्ञ बन्धन में पड़ता है, उनके विभाग का पुन: वर्णन 1049
18. जिस स्थिति से स्थित पुरुष संसार में दु:खी नहीं होता, उस स्थिति का विस्तारपूर्वक श्रीरामचन्द्र जी के लिए उपदेश 1052

19. पूर्वोक्त कथन की सिद्धि के लिए पुण्य और पावन के आख्यान का वर्णन, जिसमें पुण्य ने पितृशोकार्त पावन को ज्ञानोपदेश दिया 1058

20. पुण्य द्वारा पावन के तथा अपने नाना योनियों में जन्मों का शोक-मोह की निवृत्ति के लिए वर्णन 1061

21. तृष्णारूपी पाश का क्षय ही मोक्ष है, आशा से चित्तवृत्तियाँ होती हैं, निराश और अपने से पूर्ण पुरुष की स्वत: मुक्ति होती है, यह वर्णन 1065

22. बलि के आख्यान के सिलसिले में पाताल का वर्णन तथा बलि के राज्य का और वैराग्य से मेरु के शिखर पर विचारणा का वर्णन 1068

23. चित्त-जय कहने के लिए राजमन्त्री के उपाख्यान का और मन्त्री के अप्रतिद्वन्द्व विपुल बल का वर्णन 1072

24. राजा के दर्शन में उपायभूत वैराग्य आदि के साथ उस दुष्ट मन्त्री पर विजयप्राप्ति के उपाय का वर्णन 1075

25. सन्देह की निवृत्ति के लिए शुक्राचार्य के चिन्तन की इच्छा से बलि के हृदय में विवेकरूपी चन्द्रमा के शुभोदय का वर्णन 1081

26. स्मृति से बलि के समीप गये हुए शुक्राचार्य के बलि के प्रति तत्त्वज्ञानोपदेश का और तदनन्तर आकाशगमन का वर्णन 1083

27. शुक्राचार्यजी द्वारा उपदिष्ट मार्ग से विचार कर रहे बलि का चैतन्यपूर्णानन्द में विश्रान्ति से चिरकाल तक स्थिति का वर्णन 1085

28. बलि को निश्चेष्ट देख कर दु:खित हुए दानवों द्वारा शुक्राचार्यजी का स्मरण और उनका बलि की स्थिति कह कर दानवों का शोक दूर करना 1088

29. जीवन्मुक्त बलि की राज्यसम्पत्ति और पाताल में बन्धन का वर्णन एवं श्रीरामचन्द्र जी के लिए बलि के समान पूर्णपद में स्थिति का उपदेश 1090

30. हिरण्यकशिपु का पराक्रम, प्रह्लाद आदि पुत्रों की उत्पत्ति, नृसिंह द्वारा वध और शोकपूर्वक और्ध्वदेहिक क्रिया 1096

31. प्रह्लाद का श्रीहरि के पराक्रम का चिन्तन, आत्मीयों के कल्याण का विचार और भगवद्‌भक्ति से भगवद्‌भाव का वर्णन 1098

32. प्रह्लाद का विष्णु की मानस पूजा और असुरों के साथ बाह्य पूजा करना और उसे सुनकर आश्चर्य में पड़े हुए देवताओं का भगवान् विष्णु से पूछना 1103

33. हरिभक्ति से प्रह्लाद के विवेक आदि गुणों का उदय और प्रसन्न हुए हरि को अपने आगे देखकर स्तुति 1106

34. श्रीहरि के वर से सुविचार को प्राप्त कर तथा अनात्मवर्ग का त्याग कर प्रह्लाद का अपने अद्वितीय सच्चिदात्मस्वरूप का दर्शन 1108

35. साक्षात्कृत आत्मा का मन में विचार कर और प्रणाम कर उसके बल से जीते गये बन्धनों का अनुसन्धान कर प्रह्लाद का प्रसन्न होना 1118

36. दुर्लभ आत्मा को प्राप्त कर बार-बार प्रणाम कर रहे प्रह्लाद का आत्मा की स्तुति, अभिनन्दन और जैसे प्रिया प्रिय के साथ एकान्त में रमण करती है वैसे ही आत्मा के साथ एकान्त में रमण करना 1126

37. प्रह्लाद के पुन: समाधिस्थ होने पर नायकरहित, अतएव दस्युओं द्वारा क्षत-विक्षत दानवनगर की दुर्दशा का वर्णन 1134

38. जगत् की व्यवस्था की सिद्धि के हेतु दैत्यकुल के रक्षार्थ प्रह्लाद के प्रबोधन के लिए हरि की चिन्ता का वर्णन 1135

39. पाताल में जाकर शङ्खध्वनि से प्रबोधित प्रह्लाद से भगवान् का कल्पपर्यन्त राज्य करने के लिए कहना 1138

40. सदेह होता हुआ भी विदेह और कर्मपरायण होता हुआ भी कूटस्थ ज्ञानी जिस क्रम से व्यवहार करे, उस क्रम का प्रतिपादन 1143

41. भगवान् का स्वाज्ञावर्ती दैत्यराज प्रह्लाद से सरिवार पूजा ग्रहण कर दैत्यराज्य में अभिषेकपूर्वक उसे वर देना 1145

42. भगवान् विष्णु का पुन: क्षीरसागर में गमन, आख्यान का उत्तम फल और समाधि से जीवन्मुक्तों के व्युत्थान में हेतु का वर्णन 1149

43. यद्यपि ज्ञान ईश्वर के प्रसाद से लभ्य है तथापि ईश्वर पर भार देना ठीक नहीं। अपने पौरुष द्वारा इन्द्रियों को वश में करने से ज्ञान प्राप्त होता है, यह वर्णन 1151

44. मन की निराशता को सिद्धि के लिए दृश्य की

व्यर्थ दु:खस्वरूपता का गाधि के आख्यान में विस्तार से प्रदर्शन 1155

45. गाधि का भिल्लन के गर्भ में जन्म, किरातस्थिति और कीरपुर में राज्यप्राप्ति का वर्णन 1158

46. उसे दूसरे चाण्डाल से चाण्डाल जानकर लोगों के अग्नि में प्रवेश करने पर उसका भी अग्नि में भस्म होना और गाधि का प्रबुद्ध होना 1162

47. अतिथि से अपना पूर्वोक्त कीर राजवृत्तान्त सुनकर, स्वयं वहां जाकर, देखकर और पुन: पुन: पूछकर गाधि का विस्मित होना 1166

48. गाधि का कीर नगर में जाकर आश्चर्यपूर्वक देखकर तपस्या से भगवान् विष्णु को प्रसन्न करना तथा विष्णु का यह सब माया है, यह कहना 1170

49. गाधि का भूतमण्डल और कीरदेश में पुन: जाकर पुन: पुन: श्रीहरि से पूछ कर तथा यह सब माया है यह निश्चय कर क्रम से जीवन्मुक्त होना 1176

50. चित्त के आक्रमण के उपायों का, उत्तम ज्ञान के माहात्म्य का तथा चित्तरूपी सर्प के पीनतारूपी दोष के हेतुओं का वर्णन 1181

51. शान्त परम पद में विश्रान्ति की इच्छा कर रहे उद्दालक मुनि के मन के विविध दोषों से विक्षेप का बहुत प्रकार से वर्णन 1190

52. गुहा में आसनस्थित, समाधि में प्रवेश करने की इच्छा वाले मुनि द्वारा चिन्तत चित्तप्रबोधन के उपायों का वर्णन 1195

53. वासनाओं तथा अहङ्कार से आत्मा को अस्पृष्टता तथा शरीर और मन का वैर इत्यादि का वर्णन 1202

54. जलाने, जलप्लावन आदि द्वारा अपने शरीर में विष्णुशरीर की भावना कर रहे उद्दालक मुनि का विकल्पों को हटाकर समाधि में विश्राम लेना 1210

55. सत्तासामान्य का लक्षण, उद्दालक का युक्ति से देहत्यागक्रम तथा त्यक्त देह से चामुण्डा का स्वभूषण निर्माण 1219

56. मायारूपी अन्धकार से शून्य वासनारहित प्रबुद्ध पुरुष व्यवहाररत होने पर भी समाधिस्थ है, यह वर्णन 1223

57. अज्ञातस्वस्वरूप चैतन्य द्रष्टा होने के कारण जिस दृश्यस्वरूपता को धारण करता है वह चित् ही है उससे अन्य नहीं है, यह वर्णन 1229

58. किरातेश सुरघु के वैराग्य का वर्णन तथा उसके प्रति माण्डव्य का उपदेश 1232

59. एकान्त में बाह्य और आभ्यन्तर दृश्यों का परित्याग कर रहे राजा सुरघु को विचार से स्वात्मलाभ हुआ, यह कथन 1237

60. जीवन्मुक्त उस सुरघु के देहविनाश पर्यन्त असङ्गरूप से आचरण तथा देहविनाश के बाद आकाश के समान अवस्थान का वर्णन 1241

61. अद्वितीय परब्रह्म में स्वाभाविक चित्तैकाग्र्यात्मक समाधि के स्वरूप के ज्ञान के लिए सुरघु और परिघ के संवाद का वर्णन 1242

62. अज्ञानरूपी आवरण के हट जाने पर नित्य चित्–स्फुरण की अवस्था से विद्वानों की सदा सर्वदा अद्वितीय ब्रह्म में ही समाधि होती है, यह वर्णन 1247

63. राजा परिघ के द्वारा परीक्षण के अनन्तर जिसकी स्तुति की गई है, ऐसे तत्त्ववित् सुरघु का अपनी सहज स्थिति का सविस्तर वर्णन 1250

64. उपायों का परिज्ञान रखने वाला पुरुष जिन उपायों द्वारा मानस दोषों से विचलित नहीं होता और अपनी आत्मा का संसारदु:ख से उद्धार करता है, उन उपायों का कथन 1252

65. सह्याद्रि पर्वत का, वहाँ स्थित अत्रि ऋषि के आश्रम का तथा महर्षि अत्रि के आश्रम में स्थित विलास और भास नाम के दो तपस्वियों के जन्म, कर्म और शोक का वर्णन 1257

66. तत्त्वज्ञान से रहित भास के वचनों से उसके दु:खसागर में पर्यावर्तन का विस्तारपूर्वक वर्णन 1260

67. देह और आत्मा का सम्बन्ध नहीं है, इसका समर्थन करने के लिए बन्धन अन्त:करण की आसक्ति से होता है और अन्त:करण की आसक्ति के त्याग से उसका विनाश हो जाता है, यह कथन 1264

68. संसक्ति और असंसक्ति के लक्षण, वन्ध्यावन्ध्याविभाग तथा फल का वर्णन 1269

69. सम्पूर्ण अर्थों में आसक्ति के त्याग से मन

योगवासिष्ठ वेदान्तशास्त्र के मुख्य प्रमाणित ग्रन्थ प्रस्थानत्रयी = उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र और गीतादि में एक संस्कृत भाषा का बृहत् ग्रन्थ है। बृहद् योगवासिष्ठ में लगभग बत्तीस हजार (३२०००) या तैंतीस हजार (३३०००) श्लोक हैं। यह ग्रन्थ योगवासिष्ठमहारामायण, महारामायण, आर्षरामायण, वासिष्ठरामायण, ज्ञानवासिष्ठ और वासिष्ठ आदि नामों से भी ज्ञात है। यह ग्रन्थ अत्यन्त आदरणीय है, क्योंकि इसमें किसी सम्प्रदायविशेष का उल्लेख नहीं है। भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक इसका पाठ, मूल तथा भाषानुवाद में, चिरकाल से होता चला आ रहा है। जो महत्त्व भगवद् भक्तों के लिए भागवतपुराण और रामचरितमानस का है, तथा कर्मयोगियों के लिए भगवद्गीता का है, वही महत्त्व ज्ञानियों के लिए योगवासिष्ठ का है। सहस्त्रों स्त्री-पुरुष-राजा से रङ्क तक-इस अद्भुत ग्रन्थ के अध्ययन से प्रतिदिन के जीवन में आनन्द और शान्ति प्राप्त करते रहे हैं। इस ग्रन्थ में प्रायः सभी प्रकार के पाठकों के अनुयोग के लिए सामग्री प्रस्तुत है। जहाँ अबोध बालक भी इसकी कहानियाँ सुनकर प्रसन्न होते हैं, वहा बड़े-बड़े विद्वानों के लिए गहनतम दार्शनिक सिद्धान्तों का इसमें प्रतिपादन है। ऐसा कोई भी प्रश्न नहीं है, जिसका समाधान इसमें प्राप्त न हो। यह ऐसा अद्भुत ग्रन्थ है कि इसमें काव्य, उपाख्यान तथा दर्शन---सभी का आनन्द वर्तमान है। यह सब श्रुतियों का सार एवं माण्डूक्यकारिका का वार्तिक = व्याख्यान ग्रन्थ है। महर्षि वसिष्ठ ने स्वयं कहा है---**यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्। इमं समस्तविज्ञानशास्त्रकोशं विदुर्बुधाः ।।**

योगवासिष्ठ के प्रस्तुत संस्करण में संस्कृत के प्रत्येक श्लोकों की अत्यन्त सरल हिन्दी भाषा में सुन्दर विवेचना की गई है, जो इसकी प्रमुख विशेषता है। कोई भी व्यक्ति, जो संस्कृत से सर्वथा अपरिचित है, इसका सरलतापूर्वक अध्ययन कर योगवासिष्ठ के गूढ़दार्शनिक स्थलों को हृदयंगम कर सकेगा और उसको मुक्तिलाभ के लिए अन्य साधनों की अपेक्षा नहीं होगी। मोक्षप्राप्ति के उपाय ढूँढने की चेष्टा में व्यक्ति को आत्मानुभव होता है। इस ग्रन्थ के अध्ययन से व्यक्ति के सम्पूर्ण क्लेशों-दुःखों का अन्त होकर उसके हृदय में अपूर्व शान्ति प्राप्त होगी। अध्ययनार्थी सांसारिक सुख-दुःख की परिधि से बाहर निकलकर परम आनन्द का अनुभव करेगा। मनोयोगपूर्वक अध्ययन करनेवाले निश्चय ही इस जीवन में ब्रह्मज्ञान कर मुक्ति को प्राप्त करेंगे। यह ग्रन्थ ज्ञान का भण्डार है। वेदान्त के ग्रन्थों में यह चमकता हुआ रत्न है। मुमुक्षु के लिए यह ग्रन्थ नित्य स्वाध्याय-योग्य है। ग्रन्थ की मौलिक उपादेयता की दृष्टि से आशा की जा सकती है कि वेदान्त के सच्चे जिज्ञासुओं में इसका विशेष प्रचार-प्रसार होगा।

- **देवीपुराणम्।** हिन्दी टीका सहित। श्री एस.एन. खण्डेलवाल
- **श्रीविष्णुमहापुराणम्।** हिन्दीटीका-श्लोकानुक्रमणी सहित। टीकाकार-श्री एस. एन. खण्डेलवाल
- **श्रीसाम्बपुराणम्।** हिन्दी टीका सहित। श्री एस. एन. खण्डेलवाल
- **सौरपुराणम् (सूर्यपुराणम्)।** हिन्दी टीका सहित। श्री एस. एन. खण्डेलवाल
- **श्रीवराह पुराणम्।** हिन्दीटीका-श्लोकानुक्रमणी सहित। टीकाकार-श्री एस. एन. खण्डेलवाल
- **श्रीपद्ममहापुराणम्।** (1-7 भाग) हिन्दीटीका-श्लोकानुक्रमणी सहित। टीकाकार-श्रीशिवप्रसाद द्विवेदी
- **श्रीविष्णुधर्मोत्तरमहापुराणम्।** (1-3 भाग) हिन्दीटीका-श्लोकानुक्रमणी सहित। टीकाकार-श्रीशिवप्रसाद द्विवेदी

ISBN : 978-93-85005-34-3

9 789385 005343

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी-221001

csp_naveen@yahoo.co.in